ASU2A10a 24/9/2012

दीपावली / दीवाली / दिवाली

दीपावली शब्द का अर्थ है दीपों की पंक्ति। भारत में मनाए जानेवाले सभी त्यौहारों में दीपावली का बहुत ज्यादा महत्त्व है। इस त्यौहार का संदेश है – अंधकार से प्रकाश की ओर जाना। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार यह त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या को तथा ग्रिगेरियन कैलन्डर के अनुसार 13 अक्तूबर से 14 नवंबर के बीच पड़ता है। राम भक्तों के अनुसार दीवाली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। इसी खुशी में यह त्यौहार मनाया जाता है। कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मानना है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया जिससे जनता में अपार हर्ष फैल गया और लोगों ने घी के दीपक जलाए। हिन्दुओं के अलावा इसे जैन, सिख, तथा बौद्ध धर्म के लोग भी मनाते हैं। जैनों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण-दिवस भी दीपावली को ही है। सिक्खों के लिए भी दीवाली महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन अमृतसर में 1577 में स्वर्ण-मन्दिर का शिलान्यास हुआ। इसके अलावा 1619 में दीवाली के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था। नेपालियों के लिए यह त्यौहार महान है क्योंकि इस दिन से नेपाल में नया वर्ष शुरू होता है। संस्कृति सुधारक महर्षि दयानन्द ने दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा आकाशदीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दू और मुसलमान दोनों भाग लेते थे।

दीपावली त्यौहार एक दिन नहीं बल्कि कई दिनों तक चलता है। दशहरे के बाद से ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं। लोग नए-नए कपड़े सिलवाते हैं तथा अपने घरों का कोना-कोना साफ़ करते हैं। दीपावली से दो दिन पहले धनतेरस का त्यौहार आता है। धनतेरस के दिन बरतन खरीदना शुभ माना जाता है। इस दिन तुलसी तथा घर के दरवाज़े पर दीपक जलाए जाते हैं। इससे अगले दिन छोटी दीपावली होती है। इस दिन यम पूजा की जाती है। अगले दिन दीपावली आती है। इस दिन घरों में सुबह से ही तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। बाज़ारों में खील-बताशे, मिठाइयाँ, लक्ष्मी-गणेश आदि की मूर्तियाँ बिकती हैं। जगह-जगह पर आतिशबाज़ी और पटाखों की दूकानें सजती हैं। सुबह से ही लोग रिश्तेदारों तथा मित्रों के घर मिठाइयाँ व उपहार देने जाते हैं। दीपावली की शाम लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा की जाती है। पूजा के बाद लोग अपने-अपने घरों के बाहर दीपक जलाकर रखते हैं। दीपावली के दूसरे दिन व्यापारी अपने पुराने बही-खाते बदल देते हैं। वे दूकानों पर लक्ष्मी-पूजन करते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से धन की देवी लक्ष्मी उन पर खुश रहेगी। दीपावली से अगले दिन गोवर्धन का त्यौहार आता है। इस दिन लोग अपने गाय-बैलों को सजाते हैं तथा गोबर का पर्वत बनाकर उसकी पूजा करते हैं। अगले दिन भाई दूज का त्यौहार होता है। दीपावली त्यौहार कई पीढ़ियों से चला आ रहा है इसलिए हर प्रांत में इसे मनाने के कारण एवं तरीके अलग-अलग हैं। यह त्यौहार समाज में उल्लास, भाई-चारे तथा प्रेम का संदेश फैलाता है।